गज़ल

कितना हंसी करम किया मुझ पर कहे बगैर
आये वोह खुद ही चल के मेरे घर कहे बगैर

1- मुझसे कभी न बात की काफिर कहे बगैर
न बाज आया मैं भी उन्हें दिलबर कहे बगैर

2- वाकिफ हैं मेरी खू से हर बशर कहे बगैर
कहता हूँ दिल की बात मैं अक्सर कहे बगैर

3- देखा जो मुझको साकिओं रिन्दों ने यूं कहा
ये कौन आया बज़्म के अन्दर कहे बगैर

4- किया तेरे इश्क ने मुझ पर ऐसा असर अजीब
के हाजरीन रह न सके मुकरर कहे बगैर